5 आधुनिक विश्व में चरवाहे

प्रश्न 1. लघु उत्तरीय प्रश्न- **(3 अंक)**

(1) रायका समुदाय की जीवन शैली कैसी थी?

उत्तर- राइका समुदाय- राइका देश के पश्चिमी राज्य राजस्थान का प्रमुख चरवाहा समुदाय है। यह क्षेत्र वर्ष में बहुत कम हैं। इसीलिए खेती की उपज हर साल घटती-बढ़ती रहती थी। बहुत सारे इलाकों में तो दूर-दूर तक कोई फसल होती ही नहीं थी। इसके चलते राइका खेती के साथ-साथ चरवाही का भी काम करते थे। बरसात में तो बाड़मेर, जैसलमेर, औध और बीकानेर के राइका अपने गाँवों में ही रहते थे, क्योंकि इस दौरान उन्हें वहीं चारा मिल जाता था। लेकिन अक्टूबर आते-आते ये चरागाह सूखने लगते थे। नतीजतन से लोग नए चरागाहों की तलाश में दूसरे इलाकों की तरफ निकल जाते थे और अगली बरसात में ही वापस लौटते थे। राइकाओं का एक वर्ग ऊँट पालता था, जबकि कुछ भेड़-बकरियाँ पालते थे।

(2) वन अधिनियम का चरवाहा पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर- वन अधिनियम- जिन वनों से कीमती लकड़ियाँ, जैसे- साल, सागौन, देवदार, चन्दन प्राप्त होने से उन्हें आरक्षित वन घोषित किया गया। चरवाहों की वनों में प्रवेश पर रोक लगा दी गई। इससे चारवाहे समुदाय पर जो प्रभाव पड़े वे इस प्रकार थ— (1) जिन वनों से पशुओं के लिए चारा प्राप्त होता था वहाँ प्रवेश की पाबन्दी लग गई। (2) वन जाने हेतु लाइसेंस लेना पड़ता था। (3) वन में रहने के दिनों की संख्या, प्रवेश करने और वनों से बाहर निकलने का समय निर्धारित कर दिया गया।(4) जिन भागों में प्रवेश की अनुमति थी वहाँ गतिविधियाँ सीमित कर दी गई।

(3) बच्चों, जब चारागाह सूख जाते हैं तो चरवाहों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- चरागाह तेजी से कम हो रहे थे। इसलिए बचे हुए चरागाहों में पशुओं की संख्या बढ़ने लगी। पहले जब चरवाहे मौसम के हिसाब से एक चरागाह को छोड़कर दूसरी जगह चले जाते थे, तो उस बीच चारे को दोबारा पनपने का मौका मिल जाता था। लेकिन अब जानवरों के लिए चारे की किल्लत की समस्या खड़ी होने लगी और जानवरों की संख्या कम होने लगी।

(4) नामीबिया स्थित काओकोलैंड के घुमंतू पशु पालकों की शिकायतें क्या थीं?

उत्तर- नामीबिया स्थित काओकोलैंड के घुमंतू पशुपालकों की शिकायत थी- "हम बड़ी मुश्किल में हैं। हम बस रोते रहते हैं। हमें कैद मे डाल दिया गया है। हमें तो पता भी नहीं कि हमें बंद क्यों किया गया है। हम जेल में है। हम दक्षिण मे गोश्त नहीं ला सकते। खालों को बाहर नहीं भेज सकते। हम अपने जानवरों को अपनी भेड़ों और बकरियों को वहाँ ले जाना चाहते हैं। पर सीमाएँ बंद है, हमारा जीना मुश्किल है।"

(5) औपनिवेशिक सरकार के चराई कर की नियमावली के नियम बताइए?

उत्तर- औपनिवेशिक सरकार परती भूमि को बैकार मानती थी क्योंकि इससे उसे कोई राजस्व प्राप्त नहीं होता था। अतः वह सभी चरागाहों को कृषि भूमि में परिवर्तित करनी चाहती थी। उसका मानना था कि यदि ऐसा कर दिया जाए तो भू-राजस्व भी बढ़ेगा और जूट (पटसन), कपास, गेहूँ जैसी फसलों के

उत्पादन मे भी वृद्धि होगी। सभी चरागाहो को अंग्रेज सरकार परती भूमि मानती थी क्योंकि उससे उन्हें कोई लगान नही मिलता था। उन्नीसवीं सदी के मध्य से देश के विभिन्न भागो मे परती भूमि विकास के लिए नियम बनाए जाने लगे। इन नियमों की सहायता से सरकार गैर खेतिहर जमीन को अपने अधिकार मे लेकर कुछ विशेष लोगो को सौपने लगी। इन लोगो को विभिन्न प्रकार की छूट प्रदान की गई और ऐसी भूमि पर खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

(6) रबी और खरीफ की फसल में अंतर बताइए?

उत्तर- रबी और खरीफ की फसल में अन्तर-

खरीफ की फसल अक्टूबर नवंबर मे तैयार होती है, जिस समय पतझड़ होता है। अतः इस दौरान तैयार होने वाली फसलों को भी पतझड की फसल यानि खरीफ कहा गया। रबी फसले, वे फसलें है, जिन्हें जाड़ो के मौसम मे उगाया जाता है। यही वजह है रबी फसलों को ठंडी की फसल या बसंत ऋतू की फसल भी कहते हैं।

(7) अपराधी जनजाति अधिनियम बनाने के क्या कारण थे?

उत्तर- अपराधी जनजाति अधिनियम- ब्रिटिश सरकार को घुमन्तु जाति से हमेशा शंका बनी रहती थी, इसलिए उन पर ये नियम लगाए गए। घुमन्तू व्यापारियों और घूम-घूमकर सामान बेचने वालो को वे संदेहास्पद मानते थे। मवेशियो के लिए चारा खोजने वालो पर भी उन्हे विश्वास नहीं था इसलिए उनके बजाए अधिनियम से जनजातियो के जीवन में बदलाव आया—

(1) उन्हें जन्म से ही अपराधी जनजाति घोषित कर दिया गया। (2) उनके लिए एक अधिसूचित ग्रामीण क्षेत्र रहने के लिए निर्धारित कर दिया गया। (3) उन्हें निर्धारित क्षेत्रो से बिना अनुमति बाहर जाने नही दिया जाता था। (4) ग्रामीण पुलिस हमेशा इन पर नजर रखती थी।

(8) बच्चों, आपके अनुसार चरवाहे जंगल के आसपास ही क्यों रहते हैं?

उत्तर- ये लोग जंगलों और छोटे-छोटे खेतों के आसपास रहते थे। वे अपने जानवरों की देखभाल के साथ साथ कई दूसरे काम-धंधे भी करते थे। पहाड़ी चरवाहो के विपरीत यहाँ के चरवाहों का एक स्थान से दूसरे स्थान जाना सर्दी-गर्मी से तय नहीं होता था। ये लोग बरसात और सूखे मौसम के हिसाब से अपनी जगह बदलते थे।

(9) परती भूमि नियमावली की महत्वपूर्ण बातें बताइए?

उत्तर- परती भूमि नियमावली- औपनिवेशिक सरकार के लिए गैर-कृषि भूमि जो अनुत्पादक थी उस पर न तो राजस्व मिलता था न ही कृषि उत्पादन आय होती थी। इसे वर्ज्य या अनुपयोगी भूमि के रूप में देखा जाता था। कृषि में इसका उपयोग आवश्यक था। भूमि सम्बन्धी नियमावली से चरवाहों के जीवन में निम्न परिवर्तन हुआ- (1) गैर-कृषि भूमि चरवाहों से छीनकर खास लोगों को दे दी गई। (2) उन्हें दी गई भूमि पर कृषि करने एवं यहाँ रहने के लिए प्रोत्साहित किया गया, उन्हें अनेक प्रकार की छूट भी दी गई। (3) कुछ चरवाहो को नए क्षेत्र में भेजकर गाँव का मुखिया भी बनाया गया। (4) चरागाह भूमि जिस पर पशु चरते वे उसके छिलने से पशुओं के लिए चारे का संकट होने लगा।

(10) बंजारा समुदाय व गद्दी समुदाय के सामाजिक जीवन में क्या भिन्नता है?

उत्तर- बंजारा- ये लोग उत्तरप्रदेश, पंजाब, राजस्थान, मध्य प्रदेश और राजस्थान के ग्रामीण इलाको में रहते थे। चारागाहों की खोज मे वे लंबी-लंबी यात्रा करते। ये लोग किसानों को मवेशी बेचते थे और बदले में अनाज और चारा खरीदते थे।

गद्दी- ये चारावाहे हिमाचल प्रदेश में रहते है। ये जाड़े में शिवालिक के निचले इलाकों में रहते है और फिर अप्रैल में लाहुल और स्पीति की तरफ चले जाते हैं।

(11) 1871 में औपनिवेशिक सरकार द्वारा पारित अपराधी जनजाति अधिनियम की मुख्य विशेषताओं की संक्षेप में समीक्षा कीजिए?

उत्तर- सन् 1871 में औपनिवेशिक सरकार ने आपराधिक जनजाति अधिनियम बनाया। इसकी मुख्य बातें इस प्रकार थीं- (1) बहुत से चरवाहा समुदायों को अपराधी घोषित किया गया। (2) चरवाहा समुदायों को अधिसूचित क्षेत्र में रहने के लिए बाध्य किया गया (3) चरवाहों को बिना लाइसेंस आने-जाने पर पाबंदी लगा दी।

(12) औपनिवेशिक काल में मासाई चरवाहों के जीवन में क्या सामाजिक बदलाव आए विस्तार से समझाइए?

उत्तर- चरवाहे अपने पशुओं को निश्चित चारागाहों में ही चराते थे, जिससे चारा कम पड़ने लगा चारे की कमी के कारण पशुओं की सेहत और संख्या घटने लगी। चारागाहों का आकार सिमटकर बहुत छोटा रह गया। बचे हुए चारागाहों पर पशुओं का दबाव अधिक बढ़ गया।

(13) अपराधी जनजाति अधिनियम पर टिप्पणी लिखिए?

उत्तर- सन् 1932 में एक ब्रिटिश सैन्य अधिकारी लेफ्टिनेंट जनरल सर जॉर्ज मैक्मुन ने अपनी किताब 'द अंडरवर्ल्ड ऑफ इंडिया' में लिखा- "वे एकदम मैले-कुचेले, समाज की गन्दगी और किसी खेत में घास चर रहे पशुओं के समान है"। दरअसल, मैक्मुन अपनी किताब में जिन लोगों को संबोधित कर रहा था। ये वो लोग जिन्हें ब्रिटिश सरकार ने कुख्यात अपराधिक जनजाति अधिनियम, 1871 के जरिये 'आपराधिक जनजाति घोषित कर दिया था।

1871 में बने इस अधिनियम में समय-समय पर संशोधन किये गए और धीरे-धीरे लगभग 150 से भी अधिक जनजातियों को इसके तहत अपराधी घोषित कर दिया गया। पुलिस में भर्ती होने वाले जवानों को यह सिखाया जाने लगा कि ये जनजातियाँ पारंपरिक रूप से आपराधिक प्रकृति की रही हैं।

इसका नतीजा यह हुआ कि इन जनजातियों के लोग देश में जहाँ कही भी रह रहे थे, उन्हें अपराधियों के तौर पर देखा जाने लगा और पुलिस को उनका शोषण करने की अपार शक्तियाँ दे दी गई।

(14) बच्चों, कल्पना कीजिए, कि आप एक चरवाहा परिवार के सदस्य है, और सरकार ने आप के समुदाय को अपराधी घोषित कर दिया है तो आप का अगला कदम क्या होगा? आप कैसा महसूस कर रहे हो, और इससे आपकी जिंदगी पर परिवार पर क्या प्रभाव पड़ेंगे?

उत्तर- यदि हम चरवाहा परिवार के सदस्य होते और सरकार हमारे समुदाय को अपराधी घोषित करती तो हम अपने आप को और हमारे जानवारों को सही साबित करने के लिए ठोस कदम उठाते। हाँ ये बात और है, कि सरकार द्वारा हमें अपराधी घोषित करना, एक बहुत ही निन्दनीय महसूस करने जैसी बात है, और इससे हमारा परिवार पूरी तरह टूट चुका होता।

(15) औपनिवेशिक सरकार ने बेकार पड़ी भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिए क्या योजना बनाई।

उत्तर- औपनिवेशिक सरकार को बेकार पड़ी भूमि कृषि रहित लगती थी इसके लिए उन्होंने कुछ कानून बनाए जो इस प्रकार थे— (1) इस भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिए 'परती भूमि विकास अधिनियम'। (2) गैर-कृषि योग्य भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए विशेष लोगों के हाथों में सौप दिया। कृषि विकास के लालच में उन्हें गाँव का मुखिया बना दिया गया। (3) इस प्रकार की बेकार भूमि चारागाह थी अतः चरवाहों से कर वसूलना प्रारम्भ किया। (4) बेकार भूमि पर चरवाहों को आने-जाने का लाइसेन्स दिया, पशु चरवाहा कर प्राप्त करने लगे। (5) चरागाह को कृषि योग्य भूमि में बदलने से कृषि का विकास हुआ। (6) चरागाह सिमटने से पशुओं की चराई पर प्रभाव पड़ा। चारे के संकट से पशुओं का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा।(7) पशुपालकों की संख्या घटने लगी। वे दूसरे व्यवसायों की ओर जाने को बाध्य हो गए।

(16) औपनिवेशिक शासन द्वारा किए गए बदलाव का चरवाहों ने सामना किस प्रकार किया?

उत्तर- औपनिवेशिक शासन और चरवाहों का जीवन स्रोत औपनिवेशिक शासन के दौरान घरवाहों की जिंदगी में गहरे बदलाव आए। उनके चरागाह सिमट गए, इधर उधर आने-जाने पर बंदिशें लगने मगी और उनसे जो लगान वसूल किया जाता था उसमें भी वृद्धि हुई। खेती में उनका हिस्सा घटने लगा और उनके पेशे और हुनरों पर भी बहुत बुरा असर पड़ा।

(17) औपनिवेशिक काल में सरहदे बंद हो जाने पर चरवाहों की जीवन शैली कैसी थी?

उत्तर- औपनिवेशक काल में सरहदे बंद हो जाने पर चारावाहों की जिंदगी रातों-रात बदल गई। नई रात पाबंदियों और बाधाओं की आड़ में उन्हें प्रताड़ित किया जाने लगा और वे छोटे-से इलाके में खुद को कैद महसूस करने लगे। इससे उनकी चरवाही और व्यापारिक, दोनों तरह की गतिविधियों पर बहुत बुरा असर पड़ा।

(18) मासाई योद्धा समूह के आभूषण व पहनावा कैसा था? बच्चों, क्या आपके आसपास के क्षेत्र में कैसे आभूषण या पहनावे का उपयोग कोई समुदाय विशेष करता है तो बताइए?

उत्तर- मासाई योद्धा गहरे लाल रंग की शुका और चमकदार मोतियों के आभूषण पहनते और स्टील की नोक वाला पाँच फुट लंबा भाला रखते हैं। हमारे आसपास के क्षेत्र में वैसे आभूषण या पहनावे का उपयोग कोई समुदाय नहीं करता है।

(19) महाराष्ट्र में रहने वाले धंगर चरवाहा समुदाय का सामाजिक जीवन कैसा था? विस्तार से समझाइए ।

उत्तर- महाराष्ट्र में रहने वाले धंगर चरवाहा– धनगर भारतीय राज्यों महाराष्ट्र, कर्नाटक, गोवा मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश में पाए वाले लोगों की एक चरवाहा जाति उन्हें महाराष्ट्र, गोवा में गवली और अहीर कहा जाता है। कुछ गवली भारत के जंगली पहाड़ी इलाकों में रहते हैं। अहीर धनगर की उपजाति है।

(20) बच्चों, आप यह बताइए कि चरवाहा समुदाय के लोगों को बार-बार एक जगह से दूसरी जगह क्यों जाना पड़ता है? क्या इनकी आवागमन से पर्यावरण को कोई लाभ होता है?

उत्तर- पहाड़ी चरवाहों के विपरीत यहाँ के चरवाहों का एक स्थान से दूसरे स्थान जाना सर्दी-गर्मीसे तय नही होता था। ये लोग बरसात और सूखे मौसम के हिसाब से अपनी जगह बदलते थे। सूखे महीनों में वे तटीय इलाकों की तरफ चले जाते थे, जबकि बरसात शुरू होने पर वापस चल देते थे।

हाँ इनके आवागमन से पर्यावरण को लाभ होता हैं।

(21) मासाई चरवाहे बेती के लिए हल चलाने को प्रकृति विरुद्ध क्यों मानते हैं।

उत्तर- मासाई चरवाहे खेती के लिए हल चलाने को प्रकृति के विरुद्ध इसलिए मानते कि इससे उपजाऊ मिट्टी बढ़ जाती है। इसमें हिंसा भी अधिक होती है। उन्हें जानवरों को चराने के लिए घास भी न मिलती है।

(22) कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के मुख्य चरवाहा समुदाय के नाम लिखिए?

उत्तर- कर्नाटक और आंध्रप्रदेश के प्रमुख चरवाहा, समुदाय है- गोल्ला, कुरूमा, कुरूबा आदि।

(23) टिप्पणी लिखिए–

(1) भाबर (2) गद्दी (3) आरक्षित वन (4) परंपरागत अधिकार (5) बुग्याल (6) मासाई

उत्तर- (1) भाबर- गढ़वाल और कुमाऊँ के क्षेत्र में पहाड़ियों के निचले हिस्से में पाया जाने वाला जंगल का इलाका 'भाबर' कहलाता है।

(2) गड्डी- ये चरवाहे हिमाचल प्रदेश में रहते हैं। ये जाड़े में शिवालिक के निचले इलाकों में रहते हैं और फिर अप्रैल में लाहुल और स्फीति की तरफ चले जाते हैं।

(3) आरक्षित वन- जिनको कुछ सीमा तक संरक्षित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया हो वह 'आरक्षित वन' कहलाते है।

(4) परंपरागत अधिकार- इस कानून के तहत जो लोग वन पर स्वयं खेती कर जीविकोपार्जन करते है, उन्हें उस वन भूमि का पट्टा देने के साथ जंगल पर लोगों को सामुदायिक अधिकार देने का प्रावधान है।